THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL

THE STANFORD JOURNAL
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
ISSN: 3048-8923
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

कोरोना वायरस का छात्रों की शैक्षिक स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन-

डॉ0भावना गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
ताराचन्द वैदिक पुत्री पी०जी० कॉलेज मु0नगर, उत्तर प्रदेश

शोध सारांश-

पृथ्वी पर इतने लंबे जीवन काल का यह पहला मौका है जिसने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया।करीब 100 साल पहले प्लेग ने ऐसा ही कहर बरपाया था ।दुनिया के विकासशील देशों के साथ साथ विकसित देश भी इस वायरस की चपेट में आ चुके हैं ।इस वायरस नेन केवल किसी देश के लोगों के स्वास्थ्य पर प्रहार किया है बल्कि उसने किसी देश की रीढ समझी जाने वाली अर्थव्यवस्था, शिक्षा सुरक्षा और स्वास्थ्य विभागों तक को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया है।कोरोना वायरस से फैली महामारी ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है।जहाँ एक ओर कारोबार और नौकरियॉप्रभावित हुई है वहीं इस महामारी का असर शिक्षा पर भी पड़ा है।कोरोना महामारी से भारत में लगभग 32करोडछात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई है जिसमें 15.81 करोडलड़कियांऔर 16.25करोडलड़के शामिल हैं।वैश्विक स्तर की बात करें तो इस महामारी से दुनिया के 193 देशों के 157करोड छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई जो विभिन्न स्तरों पर दाखिला लेने वाले छात्रों का 92% है।लेकिन कोरोना वायरस महामारी ने ये भी स्पष्ट किया है कि विकास और समृद्धि को नए सिरे से परिभाषित करने का उपयुक्त समय है जो सामाजिक व पारिस्थितिक संतुलन के संदर्भ में मापी जा सके न कि बढ़ती भौतिकवादी जीवनशैली के रूप में।

प्रस्तावना-

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वायरस जनित रोग कोरोना वायरस कोविड 19 को महामारी घोषित किया।कोरोनावायरस बहुत ही सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस रहा ।कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुणा छोटा है।कोरोना वायरस का संबंध वायरसके ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है।इस रोग की शुरुआत जुकाम व खांसी मात्रसे होती है जो धीरे धीरे आगे चलकर एक विकराल रूप ले लेती है और रोगियों के श्वसन तंत्र को बुरी तरह प्रभावित करती है ।यह बहुत ही खतरनाक बीमारी है जिसकी दवा अब तक खोजी नहीं गई है।

कोरोना के प्रमुख लक्षण-

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक बुखार,खांसी,सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं।इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार,जुकाम,सांस लेने में तकलीफ नाक बहना,गले में खराश, जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है ।ये एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है इसलिए इसको लेकर बहुत सावधानी बरतने की जरूरत होती है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL
ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

हाल ही में कोरोना वायरस महामारी का जनसंख्या पर महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव पड़ा है । इस महामारीनेबच्चों,कॉलेज के छात्रों और स्वास्थ्य कर्ताओं सहितसबसे अधिक सामाजिक समूह के मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभाव डाला है जिसमें अभिघातजन्य तनाव,विकार,चिंता,अवसाद और संकट के अन्य लक्षण विकसित होने की अधिक संभावना है।सामाजिक दूरी और सुरक्षा उपायों ने लोगों के बीच संबंधों और दूसरों के प्रति सहानुभूति की उनकी धारणा को प्रभावित किया है।इस दृष्टिकोण से महामारी के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए टेली साइकोलॉजी और तकनीकी उपकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस शोध पत्र का उद्देश्य इस महामारी का छात्रों की शैक्षिक मन: स्थिति पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

छात्रों की मनःस्थिति-

कोरोना महामारी से हमारे भारत देश के छात्रों की मनःस्थिति कमजोर हुई है।यह एक जटिल समस्या है।बच्चों की स्कूली शिक्षा प्रभावित न हो इसके लिए सभी देशों को मिलकर उच्च तकनीक और बिना किसी तकनीक वाले समाधान तलाशे के प्रयास किए गए हैं।सबसे प्रभावशाली तरीके का फायदा हर देश तक पहुंचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण है।अतः स्कूली बच्चों, अध्यापकों और परिवारों तक जरूरी सहायता पहुंचाई गई है।संयुक्त राष्ट्र महासभा और आर्थिक व सामाजिक परिषद के अभी भी इस दिशा में कदम प्रयास रखें।

छात्रों के लिए शिक्षण संस्थान बंद-

संयुक्त राष्ट्र की संस्था विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोना वायरस को वैश्विक महामारी घोषित करते ही इसे निपटानेके प्रयास तेज कर दिए गए थे।संयुक्त राष्ट्र आर्थिक,वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को की ताजा रिपोर्ट के मुताबिककोविड 19 के खतरे को देखते हुए दुनिया के तमाम स्कूल बंद किए गए थे जिससे 36करोड से ज्यादा स्कूली छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई थी ।कॉन्फ्रेंसिंग में इस स्थिति से निपटने के लिए तमाम आपात उपायों पर चर्चा भी हुई जिसकेदौरान यह बात सामने आयी कि प्रत्येक पांच में से एक स्कूली छात्र और उच्च शिक्षण संस्थान के प्रत्येक छात्र में से एक छात्र की शिक्षा प्रभावित हुई। कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए देशों ने राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल व अन्य शिक्षण संस्थान बंद किये वहीं भारत समेत अन्य 14 अन्य देशों ने चुनिंदा जगहों पर स्कूल व शिक्षण संस्थान बंद किये ।जिन देशों में शिक्षा प्रभावित हुई वो सभी एशिया यूरोप मध्य पूर्व और उत्तरी अमेरिका के थे।

कोरोना से छात्रों की शिक्षा प्रभावित-

21 वीं शताब्दी में अभी तक की सबसे बड़ी समस्या या काल के रूप में सामने आए कोरोना वायरस ने आज संपूर्ण विश्व को हिला कर रख दिया। दुनिया के विकासशील देशों के साथ साथ विकसित देश भी इस

THE STANFORD JOURNAL
ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

वायरस की चपेट में आए ।इस वायरस ने न केवल किसी देश के लोगों के स्वास्थ्य कोप्रभावित किया बल्कि किसी देश की रीढ की हड्डीसमझी जाने वाली अर्थव्यवस्था, शिक्षा रक्षा और स्वास्थ्य विभाग तक को बुरी तरह से प्रभावित किया।जहाँ एक और कारोबार और नौकरियों प्रभावित हुई वहीं इस महामारीका असर शिक्षा पर भी पड़ा।स्कूल बंद होने का सबसे ज्यादा असर लड़कियों और वंचित वर्ग के छात्रों पर पड़ा।कोरोना महामारी से भारत पर आए खतरे को भांपते हुए उस समय प्रधानमंत्री मोदी ने संपूर्ण भारत में लॉक डाउन लगाया। इसका सीधा असर अध्यापकों और विद्यार्थियों के जीवन पर पड़ा।कोरोना महामारी से भारत में लगभग 32करोड छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई जिसमें 15.81 करोड़ लड़कियां और 16.25 करोड लड़के शामिल हैं।वैश्विकस्तरकी बात करें तो इस महामारी से दुनिया के 193 देशों के 57 करोड छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई। शिक्षा विभाग ने आदेश जारी करते हुए नर्सरी से लेकर आठवीं तक नौवीं और ग्यारहवीं कक्षा के सभी विद्यार्थियों को बिना पेपर दिए ही पास कर दिया गया।

शोधकीविधि-

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि द्वारा प्रत्यक्ष साक्षात्कार एवं प्रश्नावली की सहायता से उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के कुछ साक्ष्य एकत्रित किये और उनके आधार पर समाज की विभिन्न गतिविधियों विशेषकर शिक्षा एवं छात्रों पर कोरोना वायरस के पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया।

निष्कर्ष स्वरूप शोधार्थी ने पाया कि मुजफ्फरनगर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ शिक्षा के नकारात्मक पहलू सामने आये वहीं शहरी क्षेत्रों में ऑनलाइन कक्षाओं के द्वारा शिक्षा के स्तर को ऊंचा करने और शिक्षा केआधुनिकीकरण में कोरोना वायरस की विशेष भूमिका रही।

ऑनलाइन कक्षाओं का डिजिटलीकरण-

एक द्वार बंद होने से सारे द्वार बंद नहीं होते इस पुरानी कहावत को लगनशील अध्यापकों ने सही साबित करके दिखाया।अध्यापकों ने छात्रों को पढ़ाने के लिए ऑनलाइन क्लासों का एक बेहतरीन विकल्प निकाला जिससे प्रतिदिन लाखों छात्र अपने अध्यापकों से ऑनलाइन के जरिए जुड़े और अपनी समस्याओं का समाधान पाकर पढ़ाई की ।इस ऑनलाइन क्लास में भी दो तरफा संचार की सुलभता होने से अध्यापकों व छात्रों के बीच विद्यालय और कालेजजैसा ही संपर्क रहा।ऑनलाइन क्लास आज के डिजिटलीकरण दौर की मांग और जरूरत बन गयी है ।इस बात का महत्त्व समझते हुए मानव विकास संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक जी ने भी कहा था कि केंद्र सरकार ने “भारत पढ़े ऑनलाइन” अभियान की शुरुआत की जिसका सबसे बड़ा फायदा ये है कि इससे जो छात्र कक्षा में शर्म के कारण प्रश्न नहीं पूछपाते वे ऑनलाइन माध्यमों के जरिये अपनी समस्या खुलकर पूछ लेते हैं।लॉकडाउन की स्थिति में शिक्षा स्तर पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को ऑनलाइन क्लासोंनेबहुत कम कर दिया था।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL
ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

शिक्षा के क्षेत्र में भारत का 2020 का वार्षिक बजट सबसे बेहतर वरिकॉर्ड बजट रहा।इस साल केंद्र सरकार ने शिक्षा पर व्यय होने वाले बजट को पिछले साल की तुलना में 4500 करोड रूपये तक बढ़ाकर 99,312 करोड़ रुपये किया। ऐसी स्थिति में करोना से छात्रों की पढ़ाई पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े इसके लिए केंद्र सरकार व राज्य सरकार ने काम किया।सरकार ने 12 वीं तक की सभी पुस्तकों को ऑनलाइन किया ताकि इन सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को पढ़ाई करने के लिए सामग्री मिलने में कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

ऑनलाइन शिक्षा और साइबर क्राइम-

लॉकडाउन के समय ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग बड़े स्तर पर हुआ। भारत जैसे विकासशील देशों में जहाँ ये अच्छा हुआ वहीं ऑनलाइन शिक्षा के दुष्परिणाम भी सामने आए ।विद्यालय में भी छात्रों की ऑनलाइन परीक्षा चली। वे प्रश्नपत्र गूगल क्लास रूम पर डालते थे और छात्र नकल करने की दुष्ट प्रवृत्ति भी बढ़ी ।पिछले कुछ सालों में जिस तरह से डेटा चोरी और परीक्षाएं लीक होने में वृद्धि हुई है उनमें ऑनलाइन शिक्षा का क्षेत्र सबसे आगे रहा।सोशल मीडिया में दिन प्रतिदिन बढ़ रही फेक न्यूज़ और साइबर क्राइम ने ऑनलाइन शिक्षा व परीक्षाओं कीअहमियत को कम किया। साइबर क्राइम की समस्या सिर्फ हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के विकसित देशों की बड़ी समस्या बन गई है।

गरीब परिवार के बच्चों की शिक्षा पर असर-

जहाँ ऑनलाइन क्लास और सरकार द्वारा दी जा रही शिक्षा सुविधा से छात्रोंने फायदा उठाया,वहीं बड़ी संख्या में वे छात्र भी देश में मौजूद रहे जिनके पास फ़ोन जैसे माध्यम भी उपलब्ध नहीं थे ।भारत का एक बड़ा तबका गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है ऐसे में उनके लिए ऑनलाइन कक्षा और पुस्तकों के ऑनलाइन होने से कोई लाभ नहीं हुआ।ऑनलाइन साधन बहुत महंगे थे जिन्हें गरीब परिवार खरीदने में असमर्थ रहे ऐसे में उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा की बात सपना बनकर रह गई।देश में अनेक ऐसे गरीब परिवार रहें जिनके आय के सारे साधन बंद हो गए और गरीब परिवार के बच्चे शिक्षा से वंचित रह गए।

मानसिक स्वास्थ्य पर असर-

कोरोना के माहौल को देखते हुए लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी बहुत गहरा असर पड़ा।लोगों के लिए पूरा माहौल बदल गया,मानसिक दिक्कतें बढ़ गई,अचानक स्कूल,ऑफिस,बिज़नेस सब बंद हुए।बाहर जाना बंद हुआ ।जिसका मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।लोगों को परेशान करने वाली तीन वजह रही एक तो कोरोना वायरस से संक्रमित होने का डर दूसरा नौकरी और कारोबार को लेकर

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL
ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

अनिश्चितता और तीसरा लॉकडाउन के कारण आया अकेलापन।ऐसे समय में योगीजन ध्यान के बिना अपने मनोवांछित फल को प्राप्त नहीं कर सकते।

स्ट्रेस बढ़ने से शरीर पर असर-

बच्चों का हृदय कोरे कागज की तरह साफ होता है जब उनके मन में चिंताएं बढ़ती है तो स्ट्रेस बढ़ने लगता है और ज़्यादा स्ट्रेस बन जाता है। जब ये होता है तो आगे का रास्ता कोई दिखाई नहीं देता,घबराहट होती है,उर्जाहीन महसूस होता है । महामारी को लेकर इतनी अनिश्चितता और उलझन रही कि छोटे से लेकर बड़ों तक के तनाव में आने का खतरा बन गया । सभी के दिमाग,भावनाओं और व्यवहार पर इसका असर हुआ। शरीर पर असर बार- बार सिरदर्द,रोग प्रतिरोधक क्षमता का कम होना,थकान और ब्लड प्रेशर में उतार चढ़ाव,भावनात्मक असर,चिंता, गुस्सा,डर, चिड़चिड़ापन,उदासी,उलझन बढ़ गयी।दिमाग पर बार बार बुरे ख्याल कि मेरी नौकरी चली गयी तो क्या होगा? परिवार कैसे चलेगा ? मुझे कोरोना हो गया तो क्या करेंगे? सही और गलत समझ में न आने पर ध्यान न लग पाए ऐसे में लोग तरह शराब,तम्बाकू,सिगरेट का सेवन करने लगे।टीवी ज्यादा देखने लगे और अशांत रहने लगे।

विद्यार्थियों के लिए नए विकल्प-

कोरोनासंकट के समय छात्रों ने इसका डटकर सामना भी किया ।अपनाकीमती समय खराब करने की बजाय उन्होंने पढ़ाई में भी लगाया।छात्रों को इस समय कंप्यूटर, अंग्रेजी व हिंदी को गहनतापूर्वक पढ़ने और सामान्य सीखने पर बल दिया।

पिछले कुछ वर्षों में हमारी दुनिया एकदम बदल गई।हजारों लोगों की जान गई।लाखों लोग बीमार हुए।इन सब पर एक नए कोरोना वायरस का कहर टूटा और जो लोग इस वायरस के प्रकोप से बचें उनका भी रहन सहन एकदम बदल गया।छात्रों की मनोस्थिति बदल गई।

छात्रों में राष्ट्रवाद की भावना-

धर्म और नस्ल का भेद केराजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि दुनिया के ग्लोबल विलेज बनने के साथ राष्ट्रवाद की भावना ने ज़ोर पकड़ा।लगभग हर देश के लोग किसी न किसी समुदाय से खतरा महसूस करते हैं या अपने आपको कैसे श्रेष्ठ समझते हैं।बीते कुछ समय के भारत को देखें तो यहाँ साम्प्रदायिक समीकरणों की वजह से लगातार सामाजिक समीकरणों कोबिगड़ते देखा गया।अब जब दुनिया भर में गुणों का वायरस का प्रकोप फैला तो इन सब बातों के बारे में सोचने की फुरसत लोगों में नहीं रही।अभी समाज देश और दुनिया भर के लोग इस समय अपने परिवार को छोड़ कर पड़ोसी से भी बात नहीं करते हैं जिससे छात्रों में राष्ट्रवाद की भावना पनप रही है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL
ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

छात्रोंमें श्रम की पहचान-

कोरोना वायरस के हमले के बाद ज्यादातर लोगों को इसका महत्त्व समझ में आने लगा है ।मजदूर वर्ग के छात्र श्रम के महत्त्व को समझ रहे हैं।कुछ लोगों ने पिछले दिनों इस बारे में जरूर सोचा होगा कि जमादार सुबह शाम हमारे मलको उठाना बंद कर दें तो क्या होगा या फिर कूड़े वाला अगले 21 दिन कूड़ा नहीं उठाए तो क्या होगा या फिर डिलीवरी करने वाला ऐसा करना बंद कर दें तो क्या होगा? कोरोना संकट केवक्त छात्रों ने श्रम की महत्ता को जाना।

पर्यावरण के प्रति जागरूक-

कोरोना वायरस के चलते जब पूरा देश बंद हुआ तब फैक्टरियां, ऑफिस यहाँ तक कि रेल बस सुविधाएं भी बंद हो गई अर्थव्यवस्था को तो काफी नुकसान हुआ लेकिन पर्यावरण की हालत सुधर गई।लॉक डाउन के चलते हवा की गुणवत्ता बढ़ गयी,सड़कें वीरान हुई मगर मंजर साफ हो गया कि छात्र पर्यावरण के प्रति जागरूक हुए।

छात्रों का परिवार के साथ समय-

कोरोना महामारी के चलते मनुष्यने अपने परिवार के साथ समय बिताया ।कोई काम नहीं होने के कारण सामाजिक जीवन के साथ ऐसा होना स्वाभाविक है लेकिन जीवन की भागदौड़ में कई बार आम लोग भी अपने परिवार को समय नहीं दे पाते।लेकिन कोरोना के समय सभी को अपने परिवार के साथ वक्त बिताने का मौका मिला।

कोरोना के कहर ने देश की शिक्षा अर्थव्यवस्था सभी को नुकसान पहुंचाया ।दुनिया का मंदी की चपेट में आना अभी भी एक हकीकत है जैसे विश्व अर्थव्यवस्था घुटनों के बल आ गयी थी वैसे ही आधुनिक आर्थिक और शैक्षिक तमाम गतिविधियां भी ठप हो गयी।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कोरोना ने पूरे विश्व की शैक्षिक,राजनीतिक,सामाजिक ,आर्थिक व्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचाया है ।भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना वायरस से बचने के उपायों में 22 मार्च के दिन संकल्प और संयम के रूप में जनता कर्फ्यू की अपील देशवासियों से की थी और देश की अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए बाद में लोगों की जान भी है जान भी है की घोषणा करते हुए नरेंद्र मोदी ने आवश्यक खानपान में दवाओं के साथ बाजार की सुविधाएं भी मुहैया कराई।दुनिया भर के संगठनों ने टीकों का विकास और परीक्षण किया सभी ने कोरोना वायरस के खिलाफ़ टीके विकसित करने का कार्य शुरू और कोरोना को मिटाने की एक सफल शुरुआत हुई।

THE STANFORD JOURNAL
ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि कोरोनावायरस नेहीं हमारे छात्रों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव डाले हैं। सकारात्मक में ऑनलाइन शिक्षा में वृद्ध, लोगों को एक साथ लाना, एकता की शिक्षा देना और बहुत कुछ शामिल है।

नकारात्मक में छात्रों की मनःस्थिति, पढ़ाई का सुचारु रूप से न चलना और छात्रों की दिनचर्या में खलल पढ़ना आदि बहुत कुछ शामिल थ। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या इस महामारी रूपी विश्व युद्ध को झेलने के बाद हम अपनी जीवनशैली और समाज के प्रति अपने रुख में बदलाव ला सकेंगे? क्या छात्रों के विकास की बात के साथ हम अपने समाज और प्रकृति की पीड़ा को भी ध्यान में रखेंगे?

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.विश्व स्वास्थ्य संगठन,जनवरी 2000 की रिपोर्ट।

2.भारत पढ़ें ऑनलाइन अभियान , मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक का भाषण।

3.टाइम्स ऑफ इंडिया,5 अप्रैल 2000 का समाचार पत्र।

4.आयुष मंत्रालय आयुष भवन नई दिल्ली की रिपोर्ट के अनुसार।

5.केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार की रिपोर्ट व आरोग्य सेतु एप की कार्ड अपडेट,11 अक्टूबर 2020 की रिपोर्ट के अनुसार।

6.दैनिक जागरण मुजफ्फरनगर, 8 दिसंबरपृष्ठ संख्या 6 ।

7.हिंदुस्तान मेरठ,6 नवंबर 2021 पृष्ठ संख्या 4 ।8.अमर उजाला मुजफ्फरनगर,25 दिसंबर पृष्ठसंख्या 3 ।

9.अमर उजाला,2 जनवरी 2022 पृष्ठ संख्या 5।

10. http:// en. Unesco. Org

11.http://www.who.in

12.wikipedia.org